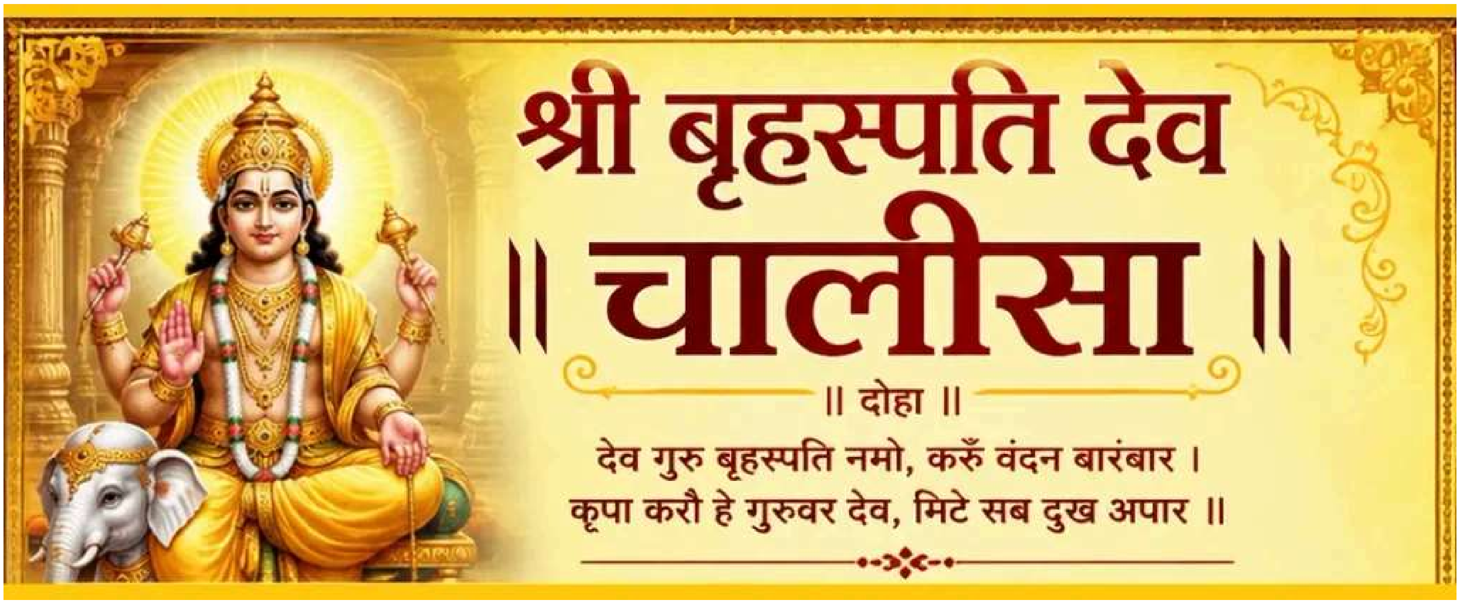

brihaspati chalisa श्री बृहस्पति देव चालीसा गुरु बृहस्पति चालीसा पाठ, आरती और पूजा विधि

🌼 श्री गुरु बृहस्पति देव चालीसा 🌼

> ***॥ श्री गुरु बृहस्पति देव चालीसा ॥***

🪔 ॥ मंगलाचरण ॥

॥ दोहा ॥

गाउे नित मंगलाचरण, गणपति मेरे नाथ ।
करो कृपा माँ शारदा, जीव रहें मेरे साथ ॥

🌻 ॥ देवगुरु बृहस्पति की स्तुति ॥

वीर देव भक्तन हितकारी ।
सुर नर मुनिजन के उद्धारी ।

वाचस्पति सुर गुरू पुरोहित ।
कमलासन बृहस्पति विराजित ॥

स्वर्ण दंड वर मुद्रा धारी ।
पात्र माल शोभित भुज चारी ।

है स्वर्णिम आवास तुम्हारा ।
पीत वदन देवों में न्यारा ॥

✨ ॥ देवगुरु के दिव्य स्वरूप का वर्णन ॥

स्वर्णारथ प्रभु अति ही सुखकर ।
पाण्डुर वर्ण अश्व चले जुतकर ।

स्वर्ण मुकुट पीताम्बर धारी ।
अंगिरा नन्दन गगन विहारी ॥

अज अगम्य अविनाशी स्वामी ।
अनन्त वरिष्ठ सर्वज्ञ नामी ।

श्रीमत् धर्म रूप धन दाता ।
शरणागत सर्वापद् त्राता ॥

📖 ॥ ज्ञान एवं विद्या के दाता ॥

पुष्य नाथ ब्रह्म विद्या विशारद ।
गुण बरने सुर गण मुनि नारद ।

कठिन तप प्रभास में कीन्हा ।
शंकर प्रसन्न हो वर दीन्हा ॥

देव गुरू ग्रह पति कहाओ ।
निर्मल मति वाचस्पति पाओ ।

🕉 ॥ देवताओं के हितकारी ॥

असुर बने सुर यज्ञ विनाशक ।
करें सुरक्षित मन्त्र से सुर मख ॥

बनकर देवों के उपकारी ।
दैत्य विनाशे विघ्न निवारी ।

बृहस्पति धनु मीन के नायक ।
लोक द्विज नय बुद्धि प्रदायक ॥

🌾 ॥ गुरु कृपा एवं शुभता ॥

मावस वीर वार ब्रत धारे ।
आश्रय दें सर्व पाप निवारें ।

पीताम्बर हल्दी पीला अन्न ।
शक्कर मधु पुखराज भू-लवण ॥

पुस्तक स्वर्ण अश्व दान कर ।
ददेवें जीव अनेक सुखद वर ।

विद्या सिन्धु स्वयं कहलाते ।
भक्तों को सन्मार्ग चलाते ॥

💥 ॥ इन्द्र प्रसंग ॥

इन्द्र किया अपमान अकारण ।
विश्वरूपा गुरू किये धारण ।

बढ़ा कष्ट सब राज गँवाया ।
दानव ध्वज स्वर्ग लहराया ॥

क्षमा माँग फिर स्तुति कीन्ही ।
विपदा सकल जीव हर लीन्ही ।

बढ़ा देवों में मान तुम्हारा ।
कीरति गावें सकल संसारा ॥

🙏 ॥ गुरु शरण एवं कृपा ॥

दोष बिसार शरण में लीजै ।
उर आनन्द प्रभु भर दीजै ।

सदगुरू तेरी प्रबल माया ।
तेरा पारा ना कोई पाया ॥

सब तीर्थ गुरू चरण समाये ।
समझे विरला बहु सुख पाये ।

अमृत वारिद सदृश वाणी ।
हिरदय धार भए ब्रह्ज्ञानी ॥

🌺 ॥ भक्ति एवं मुक्ति का मार्ग ॥

शोभा मुख से बरनि न जाईं ।
देवें भक्ति जीव मनचाही ।

जो अनाथ ना कोइ सहाई ।
लख चोरासी पार कराहीं ॥

प्रथम गुरू का पूजन कीजे ।
गुरू चरणामृत रुच-रुच पीजै ।

मृग तृष्णा गुरू दरशन राखी ।
मिले मुक्ति हो सब जग साखी ॥

🌼 ॥ गुरु चरणों की महिमा ॥

चरणन रज सतूगुरु सिर धारे ।
पा गए दास पदारथ सारे ।

जग के कार विहारण दोड़े ।
गुरू मोह के बन्धन तोड़े ॥

पारस माणिक नीलम रत्ना ।
गुरूवर सम्मुख व्यर्थ कल्पना ।

कर निष्काम भक्ति गुरुवर की ।
सुन्दर छवि धारे सुखकर की ॥

🪔 ॥ गुरु भक्ति का फल ॥

गुरू पताका जो फहारायें ।
मन क्रम वचन ध्यान से ध्यायें ।

काल रूप यम नहीं सतावें ।
निश्चय गुरुवर पिंड छुड़ावें ॥

भूत पिशाच्र निकट ना आवें ।
रोगी रोग मुक्त हो जावें ।

संतती हीन संस्तुति गावें ।
मंगल होय पुत्र धन पावें ॥

🌸 ॥ अंतिम चौपाई ॥

“मनु! गुण गाहिरदय हर्षावे ।
स्नेह जीव चरणों में लावे ।

जीव चालीसा पढ़े पढ़ावे ।
पूर्ण शांति को पल में पावें ॥

॥ दोहा ॥

मात पिता के संग मनु, गुरू चरण में लीन ।
किरपा सब पर कीजिये, जान जगत में दीन ॥

> ***॥ इति श्री बृहस्पति चालीसा ॥***